IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छत्तीसगढ़ की प्राचीन नगरी . मल्हार पुरातात्विक सम्पदा

डॉ. एम.के. मिश्रा
सहायक प्राध्यापक.
भूगोल विभाग.
शा.एस.एन.जी. कालेज मुँगेली, छत्तीसगढ.

डॉ. (श्रीमती) एम. मिश्रा
सहायक प्राध्यापक.
भूगोल विभाग.
शा.एस.एन.जी. कालेज मुँगेली, छत्तीसगढ

प्रस्तावना

मल्हार बिलासपुर जिला मुख्यालय से 32 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण पूर्व में बिलासपुर- शिवरीनारायण मार्ग में मस्तूरी से जोंधरा जाने वाली सड़क के पार्श्व में बसा है। छत्तीसगढ़ के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नगरों में मल्हार का स्थान सर्वोपरि है। कारण, मल्हार के समान अन्य किसी भी स्थान पर ईसा पूर्व छठवीं से तेरहवीं शताब्दी तक क्रमबद्ध सभ्यता का विकास क्रम नहीं मिलता। सांस्कृतिक उत्थान की दृष्टि से मल्हार की भौगोलिक स्थिति भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह स्थान अरपा, लीलागर और शिवनाथ नदियों से क्रमशः पूर्व एवं दक्षिण में सीमांकित है। कौशम्बी से दक्षिण-पूर्व में समुद्र तट की ओर जाने वाला प्राचीन मार्ग मल्हार-शिवरीनारायण-सारंगढ़-सम्बलपुर होकर जगन्नाथपुरी जाता है।

मल्हार - राजवंशों की राजधानी

मल्हार को दक्षिण कौशल के प्रमुख राजवंशों की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है गुप्तकालीन ब्राम्ही लिपि में महाराज महेन्द्रस्य काल की पको मिट्टी की मुहर यहाँ प्राप्त हुई है इससे पता चलता है कि समुद्रगुप्त की प्रशस्ति में कौशल के जिस शासक महेन्द्र का उल्लेख है, वह मल्हार में राज्य कर रहा श समुद्रगुप्त ने 360 ईश्वी के आस-पास दक्षिण कौशल पर आक्रमण किया था और उस समय वहां रहेन्द्र का शासन था

मल्हार का प्राचीन इतिहास

मल्हार का प्राचीन नाम मल्लारिपत्तन, मल्लालपत्तन, मल्लिकापुर, मलार आदि हैं। पातालेश्वर मंदिर की सफाई के समय प्राप्त कलचुरी नरेश पृथ्वीदेव द्वितीय के कलचुरि संवत् 915 से 1163 के एक शिलालेख में इसे 'मल्हापत्तन' कहा गया है। मल्हार का प्राचीनतम पुरावशेष यहाँ का गढ़ है। मल्लाल संभवतः मल्लारि से बना है। इसके नायक शिव हैं। पुराणों में मल्लासुर नामक असुर को उल्लेख मिलता है। इनके नायक शिव को 'मल्लारि शिव' कहा गया है। कलचुरि नरेश भी अधिकांशतः शिव भक्त थे। अतः इनके शासनकाल में इसका नाम 'मल्लाल' या 'मल्लाल पत्तन' रखा गया है। मल्हार से प्राप्त पुरातत्विक अवशेषों के आधार पर इसका निर्माण ईसा पूर्व दूसरी सदी माना गया है। तब इसका क्षेत्रफल 50.16 एकड़ तथा आवासीय दुर्ग का क्षेत्रफल 6.87 एकड़ था।

मल्हार के इतिहास में जिस प्रकार तालाबों की महत्ता है, उसी प्रकार प्राचीन कुँओं की भी है। कण-कण व्यापी पातालेश्वर द्वार और मंदिर के समीप 20 फुटी कुंआ है जो महाशिवरात्रि पर्व पर आये हजारों-हजारों तीर्थ यात्रियों को शीतल जल प्रदान करता है। फिर भी इसका जलस्तर कम नहीं होता। लोगों का विश्वास है कि इसका जल गंगा की तरह पवित्र है। शिव की अर्चना के लिए इस कुंए के जल का उपयोग किया जाता है। इसलिए इसे 'कनकन कुँआ' या 'कंकण कूप' कहा जाता है किवदंती के अनुसार एक बार भगवान शंकर को जब कैलाश पर्वत त्याग कर इधर-उधर भटकना पड़ा, तब वे काशी में गंगा तट पर निवास करने लगे। काशी का यह निवास स्थान 'कंकण' नामक पहाड़ी पर है। संभवतः इसी कारण इस कुंए का नाम कनकन पड़ा है।

मल्हार में प्राप्त ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी की चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा दक्षिण कोशल क्षेत्र में ही नहीं, अपितु भारत की उन पाषाण प्रतिमाओं में से एक है, जो इस अंचल की प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता को मुखरित करती है। मूर्ति स्थानक मुद्रा में है। सिर में मुकुट, कानों में कुंडल, गले में हार, हाथों में चक्र दंड है। कमर में प्राचीन ताड़ के पत्ते के समान वस्त्र हैं। विद्वानों के मतानुसार यह पाषाण प्रतिमा भारत में निर्मित भगवान विष्णु की सर्वप्रथम प्रतिमा है। पास में माँ स्कंध की प्रतिमा है, जो साल के वृक्ष के नीचे रखी है। उसके प्रत्येक अंग अलंकृत है। मल्हार की प्राचीन मूर्तिकला को देखते हुए कहा जा सकता है कि यह नगर पाषाण मूर्तियों का नगर रहा है। 10 कि.मी. के क्षेत्र में, जहाँ-कहीं खुदाई की जाती है। प्राचीन मूर्तियाँ दबी मिल रही है। खुदाई में मिली मूर्तियों में सभी सम्प्रदायों की है, जिससे यह पता चलता है कि यह प्राचीन नगर कला और संस्कृति के साथ-साथ सभी सम्प्रदायों का केन्द्र बिन्दु रहा होगा।

मल्हार के उत्खनन से प्राप्त पुरातत्विक जानकारी के अनुसार पातालेश्वर केदार मंदिर भूमित्र शैली का है। गर्भगृह एक तलघर की तरह है और नीचे तक पहुंचने के लिए नौ सीढ़ियाँ बनी है। प्राप्त शिलालेख और ताम्रवार के अनुसार जाजज्यदेव द्वितीय के शासनकाल (कलचुरी संवत् 919) में केदारेश्वर मंदिर का निर्माण हुआ। इस मंदिर का पता 1935 में ग्रामवासियों को खुदाई के समय चला। कलचुरि युग (900 से 1300 ई.) के इस मंदिर में शंकर जी की विलक्षण मूर्ति गौमुखी आकार में एक सुंदर चमकदार पत्थर से निर्मित जलहरी के मध्य त्रिकोणात्मक रूप में स्थित है। इस मूर्ति पर जितना भी जल चढ़ाया जाये, वह आंतरिक छिद्र में समाहित हो

जाता है। इस मंदिर की आधार पीढ़िका 108 कोणों वाली है। मंदिर का चबूतरा भूमि से लगभग 6 फीट ऊंचा है। प्रवेश द्वार की पट्टिकाओं में दाहिनी ओर शिव-पार्वती, ब्रम्हा-ब्राम्हणी, ललितासन में बैठे उमा-महेश्वर आदि प्रदर्शित हैं। मंदिर की द्वार पीठिका पर गाय, बैल, घोड़ा, गज, शार्दूल, नाग कन्या का कलात्मक 'अंकन' है। मंदिर के चारों ओर पत्थर में उत्खनित मूर्तियाँ दर्शनीय है। प्रत्येक को लोहे की विशेष कीलों द्वारा जोड़ा गया है।

पातालेश्वर मंदिर के निकट एक अन्य मंदिर के अवशेष हैं। जनश्रुति के अनुसार यहां एक चमत्कारी ज्योर्तिलिंग था, जिसे कोई उठाकर ले गया। कलचुरी संवत् 915 के एक शिलालेख में कहा गया है कि पृथ्वीदेव द्वितीय के सामंत ब्रम्हदेव द्वारा मल्लाल में शिव मंदिर का निर्माण कराया गया था। मल्हार के बाहर पूर्व दिशा में डिडनेश्वरी देवी का मंदिर है। यहां की मूर्ति कलचूरी संवत् 900 से 1300 की है। काले रंग के ग्रेनाइट पत्थर पर बनी यह मूर्ति विभिन्न अलंकरणों से सुसज्जित पद्मासन में विराजमान है। मुख्य मंदिर ध्वस्त हो गया है। केंवट समाज द्वारा एक नये मंदिर का निर्माण कराया गया है।

मूर्ति को किसी ठोस वस्तु से ठोंकने पर धातु के समान ध्वनि निकलती है। स्थानीय लोग इसे 'सिद्ध देवी' के रूप में मानते हैं। मंदिर में रखी अन्य मूर्तियों में उमा-महेश्वर, नटराज शिव, कुबेर सरस्वती, रौद्र शिव आदि हैं। ऐसी मान्यता है किडिंडिन दाई के समक्ष पुत्र कामना के साथ अनुष्ठान करने पर पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

मोती सागर तालाब के किनारे एक मंदिर है। इसे 'देऊर मंदिर' कहते हैं। खंडहर के रूप में स्थित इस मंदिर के स्तंभों में गणेश शिव पार्वती की आकर्षक मुद्राएं अंकित हैं। शिखर शैली का यह शिव मंदिर पांचवीं-छठीं शताब्दी का माना जाता है। 10 वीं से 13 वीं शताब्दी के मध्य में मल्हार में विशेष रूप से शिव मंदिरों का निर्माण हुआ था। इस काल में शिव गणेश कार्तिकेय दुर्गा आदि की मूर्तियाँ निर्मित हुई। मल्हार में प्राप्त मूर्तियाँ ग्रेनाइट और लाल बालू पत्थरों से बनी है। इसके अतिरिक्त स्थानीय सफेद और हल्के पीले रंग के चूना पत्थरों का प्रयोग भी हुआ है।

उत्खनन में यहाँ अनेक दुर्लभ मूर्तियाँ पायी गई हैं। इसमें कुबेर की मूर्ति प्रमुख है जो लगभग 5 फीट ऊँची और 7 वीं सदी की है। यह बैठी हुई मुद्रा में दायें हाथ में फूल और बायें हाथ में थैली लिए है। गले में यज्ञोपवीत और कानों में कुंडल है। सूर्य की प्रतिमा में सूर्य के मुख की ओर देखते हुए वृषभ की मूर्ति एक ऐसी विशेषता है जो अन्य सूर्य प्रतिमाओं में नहीं मिलती है। यहाँ प्राप्त अम्बिका की 6 फीट ऊंची प्रतिमा भी अत्यंत भव्य और आकर्षक है। अम्बिका अपने बायें हाथ से एक बालक को सम्हाले हुए सिंहासन पर खड़ी हैं।

मल्हार मे जैन और बौद्ध धर्म के अवशेष

मल्हार में जैन और बौद्ध मूर्तियाँ भी बड़ी संख्या में प्राप्त हुई है। बुद्ध की प्रतिमा के मस्तक के उपरी हिस्से में 'हे धर्म हेतु प्रभवा....' अंकित है, जो सातवीं सदी की कुटिल नागरी लिपि में है। यहां प्राचीन भवनों के अवशेष भी बड़ी संख्या में मिले हैं। इससे पता चलता है कि मौर्य काल से 13वीं सदी तक यहां इमारतों का विस्तृत रूप से निर्माण हो चुका था। यहां की भौतिक सभ्यता का विशेष विकास गुप्त युग से लेकर कलचुरियों के शासनकाल

तक हुआ□ धातुओं और पत्थरों से बने विविध कलापूर्ण आभूषण एवं दैनिक जीवन की अन्य वस्तुएं भी यहाँ अत्यधिक मात्रा में मिलती हैं□ इससे इस बात का प्रमाण मिलता है कि यहाँ सभ्यता का विशेष विकास हुआ था□

मल्हार का रामायण से सम्बन्ध

बाल्मिकी रामायण से ज्ञात होता है कि अयोध्या के महाराजा दशरथ की बड़ी रानी तथा श्रीराम की माता कौशल्या, कौशल देश की थीं□ यह कौशल राजा दशरथ द्वारा शासित कौशल से भिन्न रहा होगा, इसमें संदेह नहीं□ यहां के उत्खनन से ईशा दूसरी सदी की ब्राम्ही लिपि में लिखित एक मुद्रा प्राप्त हुई है, जिस पर 'गामस कौसलिया' (कौशल ग्राम) अंकित है□ वर्तमान में मल्हार से 16 कि.मी. की दूरी पर कोसला ग्राम स्थित है□ रामायण से यह भी ज्ञात होता है कि भगवान राम ने अपने वनवास जीवन के 10 वर्ष पंचतारा नामक स्थान में व्यतीत किए थे जो मल्हार के समीप ही स्थित है□ पास ही कहीं सबरी के झूठे बेर भी खाए थे□ सबरी के नाम पर बसा शिवरीनारायण यहां से 50 कि.मी. की दूरी पर महानदी के तट पर स्थित है तथा शबरी की मूर्ति खरौद के प्रवेश द्वार पर 'सौराइन दाइ' के रूप में स्थित है□ यहाँ शबर-निषाद लोगों के हथियार प्राप्त हुए हैं□

मल्हार की दुर्लभ मूर्तियाँ

मल्हार के निकट ग्राम बूढीखार में भी कुछ दुर्लभ मूर्तियाँ मिली हैं□ यहां से प्राप्त अम्बिका, आम के पेड़ के नीचे खड़ी है□ उनके बाएं हाथ में कमल पुष्प है□ 5 फीट 9 इंच की यह मूर्ति सातवीं शताब्दी की है□ यहाँ से प्राप्त चतुर्भुज मूर्ति करीब 5 फीट की है□ मूर्ति के दोनों हाथों में चक्र तथा दंड है तथा दो हाथ छाती के सम्मुख अंजली मुद्रा में है□ चक्र के नीचे खड़क भी दिखाई देता है□ मूर्ति के दंड में अंकित लेख दूसरी शताब्दी की ब्राम्ही तथा प्राकृत भाषा में है□ इससे ऐसा लगता है कि यह वैष्णव प्रतिमा ईसा पूर्व पहली या दूसरी शताब्दी की है□ इस मूर्ति की अन्य विशेषता उसका अधोवस्त्र है□ इस अधोवस्त्र तथा अंजली मुद्रा के कारण पुरातत्ववेत्ता इसे विष्णु की प्रतिमा के स्थान पर द्वारपाल की मूर्ति मानते हैं□

मल्हार समेकित रूप में रहस्यों का उद्घाटन करता हुआ एक ऐतिहासिक और पुरातत्विक महत्व का अद्वितीय स्थल छत्तीसगढ़ के पुरावैभव कीर्ति का बखान करता है□

संदर्भ ग्रंथ :

(1) मल्हार : बाजपेयी के. डी. एवं श्री पाण्डेय, श्याम कुमार 1978 सागर

(2) मल्हार दर्शन : पाण्डेय, रघुनंदन प्रसाद, त्रिपाठी कृष्ण कुमार 1988

(3) बिलासपुर जिला एक परिचय : डॉ. पाण्डेय, प्रभाकर 1972 बिलासपुर

(4) छत्तीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन: डॉ. शुक्ला, अशोक 1981 रायपुर

(5) छत्तीसगढ़ बेसिन : अग्रवाल पी.सी. 1968

(6) मल्हार का पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक अध्ययन : मिश्रा, राजेश कुमार 2000 बिलासपुर

(7) साक्षात्कार एवं प्रश्नावलियों से प्राप्त जानकारी

(8) छत्तीसगढ़ी भाषा में ऐतिहासिक निधियों का संयोजन

(9) विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation